International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 3 | Vol.: 9 | Jul.-Aug.-Sep.-2022 | Pages: 71–72 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

शैलेश मटियानी की कहानियों में उत्तराखण्ड की संस्कृति

प्रियंका बिष्ट
शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम0बी0जी0पी0जी0 कॉलेज,
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

Received : 08/08/2022 ***1st BPR*** : 14/08/2022 ***2nd BPR*** : 30/08/2022 ***Accepted*** : 06/09/2022

Abstract

हिंदी कथा साहित्य में शैलेश मटियानी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने पहाड़ की आंचलिकता को एक नया आयाम दिया। भाषा उनकी सर्वथा मौलिक थी, उन्होंने पर्वत से सागर तक की यात्रा करते हुए संघर्षमय जीवन के साथ साहित्य में अपने अनुभवों को पिरोया है। उन्होंने कुमाऊँ के जनजीवन वहाँ के आचार–विचार लोक संस्कृति व लोक साहित्य को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया है। कुमाऊँ की लोकसंस्कृति को समाज के सामने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। इनकी कहानियों में व्यापक जीवन दर्शन देखने को मिलता है, जिस में विविध वर्गों स्थानों, सम्प्रदायों को चित्रित किया है। भारतीय समाज के दवे कुचले, शोषित उपेक्षित वर्गीय जीवन संदर्भों निरूपण हुआ है, शैलेश मटियानी की सहानुभूति उन भूख से पीड़ित गरीब व बेसहारा फुटपाथ पर जीवन यापन करने वाले से प्रीति थी। शैलेश मटियानी के कथा साहित्य व अनुभव संसार अत्यंत व्यापक है बहुमुखी प्रतिभा के धनी व हिंदी साहित्य के बेजोड़ लेखक जिन्होंने कुमाऊँ के अंचल से लेकर मुंबई महानगरों के जीवन और रहन–सहन पर अपनी लेखनी चलायी है।

***Key words*:** आंचलिकता, संस्कृति, लोक साहित्य।

प्रस्तावना –

शैलेश मटियानी उत्तराखण्ड के आंचलिक कथाकार हैं उन्होंने अपनी कहानियों में कुमाऊँ की लोकसंस्कृति को समाज के सामने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया है।

''हमने सूरज का उगना और डूबना देखा है, ऊषा और संध्या की लालिमा देखी है, सुंदर सुगंधित फूल देखे हैं, मीठी बोलियाँ बोलने वाली चिड़ियाँ देखी हैं, कल–कल निनादिनी नदियाँ देखी हैं, नाचते हुए झरने देखें हैं– यही सौन्दर्य है।''

उन्होंने अपनी कहानियों में नारी पात्र को महत्वपूर्ण स्थान दिया कुमाऊँ स्त्रियों के जीवन का सजीव वर्णन साहित्य में मिलता है कैसे स्त्री दिन भर खेतों में काम कर शाम के भोजन की व्यवस्था करती है। और पूरे परिवार की देख–रेख साथ ही पहाड़ की विशेषताओं का वर्णन भी अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

''पहाड़ी धरती सीढ़ीनुमा खेत, खेतों से लगा घना जंगल और उन से भादों के महीने की हरियाली कुछ ही कदमों पर तो ओट लग जाती है।''

इनकी कहानियों में व्यापक जीवन दर्शन देखने को मिलता है, जिस में विविध वर्गों स्थानों, सम्प्रदायों को चित्रित किया है। भारतीय समाज के दवे कुचले, शोषित उपेक्षित वर्गीय जीवन संदर्भों निरूपण हुआ है, शैलेश मटियानी की सहानुभूति उन भूख से पीड़ित गरीब व बेसहारा फुटपाथ पर जीवन यापन करने वाले से प्रति थी जिनकी जिन्दगी को उन्होंने बहुत करीब से देखा व महसूस तो किया ही है साथ ही उनके बीच रहकर स्वयं ऐसी जिन्दगी को जिया भी है।

''गरीब पहाड़ी परिवार की यातनाओं से भागर आया गुआ दसवीं तक पढ़ी लड़का जिसकी पहुँच में सिर्फ बंबई के फुटपाथों पर बहने वाली अपराध और भुखमरी के गटर की दुनिया–गलियों और हवालातें है, ढाबों और चायघरो के जूठे बरतन और लड़के मेज साफ के आदेश 'फटाफट दो चाय मार' की आवाजें या भट्टी के किनारे गुड़ी–मुड़ी होकर लेकर ली गई नींद में आते हुए सपने है कि उस एक दिन बड़ा लेखक बनना है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 3 | Vol.: 9 | Jul.-Aug.-Sep.-2022 | Pages: 71–72 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

हिंदी कथा साहित्य से सुप्रसिद्ध के आंचलिक कथाकार शैलेष मटियानी ऐसे बेजोड़ लेखक है जिन्होंने एक अंचल से लेक महानगरों तक की जीवन चर्या को अपने साहित्य में मुखरित किया है, उनके साहित्य में कल्पना नहीं बल्कि सत्यान्वेशी यथार्थ मिलता है, उन्होंने पर्वतीय अंचलो को अपने कथा साहित्य का आधार बनाया, कुमाऊँ अंचल की जीवन और संस्कृति को अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया फणीश्वर नाथ रेणु के मैला आंचल उपन्यास जिसे हिंदी साहित्य में आंचलिक महाकाव्य कहा जाता है उन्हीं से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य में अनेक लेखकों ने अपने कथा साहित्य में आँचलिकता का श्रीगणेश किया।

''हिंदी में आँचलिकता का आगमन तो सन् 54–55 में रेणु के 'मैला आँचल'' के साथ हुआ– मगर मटियानी सन् 51–52 से ही अपने पहाड़ी अंचल वहाँ की बोली बानी, चरित और कथानकों को वैसे ही रूपरंग–गद्य स्वरों के साथ पकड़ रहे थे।''

शैलेश मटियानी की भाषा में आचंलिक शब्दों का प्रयोग हमें अनेक जगह देखने को मिलता हैं। ऐसी रचना जिसमें किसी गांव प्रांत या किसी क्षेत्र विशेष की धार्मिक राजनीतिक व सामाजिक सांस्कृतिक लोक भाषा आदि का भी वर्णन किया जाता है आँचलिक रचनाएँ कहलाती है शैलेश मटियानी की कहानियों में कुमाऊँ का खूबसूरत अंचल चित्रित होता है।

''पहाड़ की यात्रा पर निकलिए तो कितना अद्‌भुत लगता है दृश्यों का एकाएक और एक–एक में परिवर्तित होते जाना जब तक में एक औझल दूसरा सामने।'' शैलेश मटियानी का मन कुमाऊँनी परिवेश वहाँ की संस्कृति और रहन–सहन को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करने में अधिक रमा है।

शैलेष मटियानी का बचपन कुमाऊँ अंचल के अल्मोड़ा में व्यतीत हुआ बचपन में वो गांव व बकरी चराने जंगल जाते और हरी घास काटकर लाते थे, खेतों में काम करते थे। प्रकृति की गोद में रहकर उन्होंने जो अनुभव किया वहीं अपनी कहानियों में सजीव रूप से चित्रित किया है उत्तराखण्ड के लोक–गीत लोक गाथाओं देवी–देवताओं और मंदिरों का वर्णन उन्होंने अपनी अनेक कहानियों नदी किनारे गांव, पोस्टमेन, जिबुका, अर्धांगिनी, कालिका, अवतार, गोपुली गफूरन आदि के माध्यम से उजागर किया है। जहाँ उन्होंने प्रकृति की खूबसूरती अर्थात वहा की शुद्ध हवा पानी आदि को दर्शाया है वहीं उन्होंने पहाड़ के लोगों के कठिनाई से भरे जीवन व संघर्ष का वर्णन भी किया है।

''भैसियाछाना के उत्तर पश्चिम और पूरब में कहीं ऊँची पहाड़ियाँ है और भैसियाछाना भी जंगलों से घिरा हुआ है लेकिन सिर्फ चीड़ के सुयाल नदी से लेकर बिनसर पहाड़ी तक फैले हुए गांव को देखना हो तो जहां के डाक बगले की ऊँचाई तक जाना पड़ेगा या इंटर कॉलेज तक थोड़े में कहें तो यह अपने–आप में सम्पूर्ण जैसा है थोड़े से पश्चिम में रामलीला मैदान है और पूरब की ओर वैसी का सैम देवता के मंदिर से जुड़ा हुआ हालाँकि अब जागर बाईस नहीं बल्कि सात दिनों तक लगता है थोड़े–थोड़े फासले पर गोल्ल और गंगनाथ देवताओं के छोटे–छोटे मंदिर है गुफा जैसे उडियार के भीतर, लोकगीतों से लेकर फिल्मी गानों तक का चलन है क्यों कि लगभग तीन चौथाई घरों में दूरदर्शन मौजूद है।''

शैलेश मटियानी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से कुमाऊँ की अमूल्य धरोहर को नए शिल्प द्वारा समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है उनकी अनेक कहानियों में उत्तराखण्ड के ग्रामीणों का रहन–सहन वहाँ के पर्व व त्यौहार लोकनृत्य लोकगीत रीति–रिवाज आदि देखने को मिलती है।

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य व अनुभव संसार अत्यंत व्यापक है बहुमुखी प्रतिभा के धनी व हिंदी साहित्य के बेजोड़ लेखक जिन्होंने कुमाऊँ के अंचल से लेकर मुंबई महानगरों के जीवन और रहन–सहन पर अपनी लेखनी चलायी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्रेमचंद– साहित्य का उद्‌देश्य
2. मटियानी शैलेश, असमर्थ (शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियों भाग–1) पृ0 367
3. यादव राजेंद्र–शैलेश मटियानी : आस्था और संघर्ष शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कथिनियाँ (पांच खण्ड): भाग की भूमिका, पृ0 18
4. यादव राजेंद्र–शैलेश मटियानीः आस्था और संघर्ष शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कथनियाँ (पांच खण्ड): भाग की भूमिका, पृ0 29–30
5. मटियानी शैलेश, भूमिका बर्फ की चट्‌टानें (शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कथनियाँ) पृ0 217
6. मटियानी शैलेश, नदी किनारे का गांव (शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कथानियाँ–4) पृ0 378–379